“हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी - एक तुलनात्मक अध्ययन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध का प्रारुप

❑

शोधार्थी

विवेक सयाजीराव सौताडेकर

एम.ए. बी.एड्. एम.फिल्. (हिंदी)

❑

शोध निर्देशक

डॉ. हणमंत पवार

एम.ए.बी.एड. सेट, पीएच.डी. (हिंदी)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शहीद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी
ता. औसा, जि. लातूर

जून 2017

हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी - एक तुलनात्मक अध्ययन

• पृष्ठभुमि

आज प्राय: सभी भाषाओं के साहित्य में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा मानी जाती है । बंगला से आया 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी नावेल (Novel) का समानार्थी है । गद्य की अन्य विधाओं के समान उपन्यास भी आधुनिक युग की देन है । उपन्यास जीवन के चित्रण एवं विश्लेषण कार्य में विशेष समर्थ होता है ।

विद्वानों ने उपन्यासों के कई भेद किए है । किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास मेरे विशेष रुचि का विषय रहे है । हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं के ऐतिहासिक उपन्यासों ने मुझे आकर्षित किया । जब हम इतिहास की बात करते हैं, उसमें भी महाराष्ट्र में रहनेवाला कोई भी इतिहासप्रेमी व्यक्ति हो तो स्वाभाविक है कि, उसके सामने प्रतिमा खडी होती है, मध्ययुगीन भारत के तमोयुग में दैदीप्यमान सूर्य की तरह जगमगाकर अपनी राष्ट्रीयता को प्रकाशित करनेवाले युगदृष्टा छत्रपति शिवाजी की ।

ऐतिहासिक चरित्रों में मुझे छत्रपति शिवाजी के चरित्र ने सर्वाधिक आकर्षित किया । मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी पर लिखे रणजित देसाई कृत 'श्रीमान योगी' इस उपन्यास से मेरे पढ़ने की शुरुवात हुई । छत्रपति शिवाजी महाराज भारतीय जन मानस के हृदयसम्राट है । उनका चरित्र राष्ट्रीय मानबिंदु है । शिवाजी महाराज दृष्टा पुरुष तथा महान शक्तिशाली वीर, बहूजन प्रतिपालक, भारतीय नौसेना के संस्थापक, छापामार रणनीति के प्रवर्तक भारतीय राष्ट्र के जनक, दुष्ट संहारक आदि श्रेष्ठ कार्यों से उन्होनें अक्षय कीर्ति प्राप्त की है । भारतीय इतिहास को नया मोड देनेवाले वे अमर महानायक रहें है। जब तक विश्व का अस्तित्व रहेगा उन्हें याद किया जाएगा ।

छत्रपति शिवाजी का चरित्र हमारा राष्ट्रीय गौरव है । उनका चरित्र भारतियों के लिए हमेशा प्रेरक रहा है । किन्तु दुर्भाग्य से छत्रपति शिवाजी की महिमा का महाराष्ट्र के बाहर व्यापक प्रचार नहीं हुआ है । उनकी महिमा का पुरे विश्व में व्यापकता से प्रचार होना अपितु हिंदी और मराठी उपन्यासों में चित्रित छत्रपति शिवाजी के चरित्र-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन होना आवश्यक है । दोनों भाषा के उपन्यास साहित्य में चित्रित मेरे अराध्य छत्रपति शिवाजी का विस्तृत अध्ययन करने का अहोभाग्य मुझे प्राप्त होगा इस उद्देश्य से **'हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी - एक तुलनात्मक अध्ययन'** इस विषयपर पीएच.डी. की उपाधि हेतु अनुसंधान करने का विचार मैंने किया।

• शोध प्रेरणा एवं चयन

स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम उन्नायक छत्रपति शिवाजी के चरित्र का अध्ययन करने से उनके बहि:रंग तथा अंत:रंग के व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों को विस्तार से स्पष्ट करना संभव होगा ।

अपितु छत्रपति शिवाजी के चरित्र-चित्रण का अध्ययन करने की इच्छा मेरे मन में पहले से थी । इसी विषयपर अनुसंधान करने का विषय मैने श्रद्धेय डॉ. रणजीत जाधव तथा श्रद्धेय डॉ. अंबादास देशमुख जी के सामने रखा । इन सभी विद्वानों ने इस विषय पर रचना कार्य करने के लिए प्रेरणा दी । हिंदी और मराठी के उपन्यास साहित्य में अधिक मात्रा में छत्रपति शिवाजी का चित्रण चित्रित है । तथापि इस विषय पर इससे पहले किसी विश्वविद्यालय द्वारा काम नहीं हुआ है, इस विषय के सम्बन्ध में मेरे मार्गदर्शक डॉ. हणमंत पवार जी ने मेरी इस विषय के प्रति जिज्ञासा को देखकर **"हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी-एक तुलनात्मक अध्ययन"** इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति दे दी।

इसके अलावा छत्रपति शिवाजी से संबंधित हिंदी भाषा में जिनका साहित्य प्रकाशित है । जो पिछले लगभग 50 वर्षों से इसी विषयपर कर कार्य रहें श्रद्धेय डॉ. वसंत जी मोरे (कोल्हापुर), डॉ. कृष्णात पाटील (कोल्हापुर) और डॉ. विष्णु गव्हाणे (कडा, जि. बीड) इन सभी नें इस विषय चयन में मुझे प्रोत्साहित किया ।

- **अनुसंधान का उद्देश एवं महत्त्व :**

कोई भी कार्य बिना किसी उद्देश्य के नहीं किया जाता । हर किसी कार्य के पीछे उद्देश्य होता ही है । **'हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी - एक तुलनात्मक अध्ययन'** इस विषयपर होते जा रहा शोध कार्य भी सौद्देश ही है ।

युगपुरूष छत्रपति शिवाजी के रोमहर्षक जीवन में अनेक घटनाएँ घटी थी । इन सारी घटनाओं का मूल छत्रपति शिवाजी का बचपन से लेकर अंत तक निर्दोष चरित्र ही रहा है । उनका चरित्र केवल महाराष्ट्र के लिए सीमित न रहकर पूरे देशवासियों के लिए प्रेरणाप्रद बन गया । इस युगपुरूष के चरित्र को इतिहास विरुद्ध चित्रण से हानि पहुँचाई गई है । इसी कारण उनके चरित्र का सही एवं निष्पक्ष अध्ययन होना आवश्यक है । छत्रपति शिवाजी का जीवन वृत्तांत अत्यंत रोचक एवं प्रेरणाप्रद है ।

छत्रपति शिवाजी की राज्य करने की शक्ति, न्याय करने की पद्धति, स्त्रियों को सम्मान देने की पद्धति, सैनिक योग्यता अद्वितीय थी । उनका चरित्र पवित्र था । उनका शौर्य व्यक्ति को मानो साधक बना देता है । ऐसे अद्वितीय राजा एवं राष्ट्रपुरूष के चरित्र को हिंदी और मराठी भाषा साहित्य में पढ़कर उनके संबंध मे अधिक जानकारी लेकर उनका सच्चा इतिहास सामने लाना ही मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है । अपितु हिंदी और मराठी उपन्यास साहित्य में किसप्रकार से उनके चरित्र का चित्रण किया है । इसका भी तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन जो अभी तक नही हो पाया उसका भी विस्तृत अध्ययन करना मेरा उद्देश्य है । आज की नई पीढ़ि के लिए उनके चरित्र का अध्ययन करना बहुतही महत्त्व रखता है । उनके राज्य में उन्होंने किया हुआ पाणी का नियोजन, नलयोजना, करप्रणालि, किसान एवं खेती के लिए बनाएँ गये नियम, भेदभावरहित न्याय पद्धति सभी प्रायः वर्तमान स्थितिमें महत्त्व रखते है । हिंदी और मराठी साहित्य में इनके महत्त्व को प्रतिपादित करना भी इस कार्य का उद्देश्य होगा । इन्हें सामने रखकर ही मैंने प्रस्तुत विषय के आलोक में पीएच.डी. की उपाधि हेतु शोध-कार्य करुँगा ।

- **शोध / अनुसंधान की पद्धतियाँ**

अनुसंधान कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो इस हेतु मेरे शोध विषय के लिए अनुसंधान की विभिन्य पद्धतियाँ का प्रयोग किया जाएगा ।

जैसे :- आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धति, विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति, विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धति, व्याख्यात्मक अनुसंधान पद्धति आदि पद्धतियों का प्रयोग कर अध्ययन किया जाएगा। विशेष रूप से इस अनुसंधान कार्य के लिए कार्ड अनुसंधान पद्धति का विशेष रुप से उपयोग किया जाएगा । कार्ड पद्धति यह एक अभिनव एवं अत्यंत सफल अनुसंधान पद्धति है । जिसके माध्यम से अनुसंधान करना बहुतही सरल एवं सहज होता है । बावजुद इसके प्रस्तुत विषय से संबंधित मूलग्रन्थ या आधार ग्रन्थ, संदर्भ ग्रन्थ, बखर वाङ्मय, कोश, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ आदि का उपयोग किया जाएगा ।

- **प्राक्कल्पना / पूर्वानुमान**

किसी भी कार्य को सफल करने हेतु बुद्धिमान व्यक्ति उसकी कल्पना करता है या पूर्वानुमान लगाता है । उसे ही प्राक्कल्पना कहते है । अनुसंधान के क्षेत्र में प्राक्कल्पना को बहुत ही महत्त्व है । प्राक्कल्पना के कारण अनुसंधान कार्य को निश्चित दिशा मिलती है । मेरे द्वारा अपने कार्य के लिए निम्न प्राक्कल्पना को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाएगा ।

1. छत्रपति शिवाजी भारतीय जनमानस के हृदयसम्राट है ।
2. हिंदी और मराठी उपन्यासों में विभिन्न पद्धतियोंसे उनका चरित्र चित्रित हुआ है ।
3. सात सौ सालों की अपमानजनक पराजय की परंपरा को खंडित करके बहुजन समाज के लोगों के पुरुषार्थ को जगाया तथा एक नये युग का निर्माण छत्रपति शिवाजी ने किया है ।
4. छत्रपति शिवाजी ने ने समाजोत्थान के लिए जिस क्षेत्र में कार्य किया उस क्षेत्र पर अपने व्यक्तित्त्व का प्रभाव छोड दिया है ।
5. छत्रपति शिवाजी भारतीय राष्ट्रवाद के जनक, दुष्ट संहारक, धर्मनिरपेक्ष, देशप्रेमी, बुद्धिमान राजा थे।
6. उन्होंने चार सौ साल पूर्व व्यक्त किए गए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, विचार आज भी प्रासंगिक और उपयुक्त है ।
7. भारतीय इतिहास को एक नया मोड देनेवाले वह अमर महानायक रहे है ।
8. छत्रपति शिवाजी के सम्बन्ध में हिंदी और मराठी उपन्यांसो में कुछ मात्रा में इतिहास विरुद्ध चित्रण का भी अंकन हुआ है ।

अध्याय निर्धारण / अनुसंधान का प्रारुप

- **प्रथम अध्याय -** **ऐतिहासिक पृष्ठभुमी और छत्रपति शिवाजी**
- **द्वितीय अध्याय-** **हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी की राज्यव्यवस्था का चित्रण**
- **तृतीय अध्याय -** **हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी की रणनीति**
- **चतुर्थ अध्याय -** **हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी का इतिहास विरुद्ध चित्रण**
- **पंचम अध्याय -** **शिल्प-विधान**

- **उपसंहार**

उपर्युक्त अध्यायों का विवेचन निम्नप्रकार से किया जाएगा । उसमें यथावश्यक परिवर्तन संभव है ।

■ प्रथम अध्याय : ऐतिहासिक पृष्ठभुमी और छत्रपति शिवाजी

प्रस्तुत अध्याय में पूर्वपीठिका, छत्रपति शिवाजी की वंशावली, शिवाजी के राजकुल की जानकारी के साथ-साथ छत्रपति शिवाजी का संक्षिप्त जीवनवृत्त (बहि:रंग - अंत:रंग) का अध्ययन किया जाएगा।

■ द्वितीय अध्याय : हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी की राज्यव्यवस्था का चित्रण

इस अध्याय में निम्नांकित रूप से छत्रपति शिवाजी की राज्यव्यवस्था का अध्ययन किया जाएगा।

2.1.	गढ़-किले	2.2.	लोकराज्य निर्माण
2.3	नौसेना का निर्माण	2.4	अष्टप्रधान मंडल
2.5	ग्रामीण न्यायपद्धति	2.6	लोकजीवन
2.7	जनसंगठन	2.8	व्यापार उद्योग
2.9	कर प्रणाली	2.10	बहुजन प्रतिपालक
2.11	किसान हितैषी	2.12	महसूल पद्धति

बावजूद इसके सामाजिक गुणों का भी अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया जाएगा।

■ तृतीय अध्याय : हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी की रणनीति

प्रस्तुत अध्याय में निम्न रुपसे छत्रपति शिवाजी की रणनीति का अध्ययन किया जाएगा ।

(1) छापामार युद्धनीति का निर्माण

(2) अफजल खाँ प्रसंग

(3) रुस्तमे जमाँ और सिद्दी जौहर

(4) शाइस्ता खाँ प्रसंग

(5) सुरत की लूट

(6) मिर्ज़ा राजा जयसिंह (पूरंदर संधी)

(7) दक्षिण दिग्विजय

(8) कर्नाटक मुहिम

(9) कोकण अभियान आदि ।

■ चतुर्थ अध्याय : हिंदी और मराठी उपन्यासों में छत्रपति शिवाजी का इतिहास विरुद्ध चित्रण

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी और मराठी उपन्यासों में चित्रित छत्रपति शिवाजी के इतिहास विरुद्ध चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन निम्न रुप से किया जाएगा।

4.1 किवदंतियाँ

4.2 काल्पनिक प्रसंग

4.3 पात्रों के गलत नाम और गलत स्थान

4.4 धार्मिक कट्टरता

4.5 प्रेमवीर

4.6 भाषा तथा काल विपर्यास

4.7 श्रेय विभाजन

आदि प्रसंगों का वर्णन इतिहास विरुद्ध रहा है । इस चित्रण से शिवचरित्र को हानि कैसे पहुँची है इसका अध्ययन किया जाएगा । बावजूद इसके हिंदी और मराठी उपन्यासकारों के इतिहास विरुद्ध कथन का खण्डन इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा ।

■ पंचम अध्याय : शिल्प विधान

प्रस्तुत अध्याय में छत्रपति शिवाजी के संबंध में हिंदी और मराठी उपन्यासों के शिल्प-विधान की बहुआयामिता को अभिव्यक्त किया जाएगा । इन उपन्यासकारों द्वारा लिखे गये प्रस्तुत उपन्यासों मे व्यक्त भाषा विशेषता जैसे - पात्रानुकूल भाषा, प्रतीकात्मक भाषा, अलंकारिक भाषा, चित्रात्मक भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा, वातावरण प्रधान भाषा, भावात्मक भाषा, काव्यात्मक भाषा, लोकभाषा, ध्वन्यात्मक भाषा, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, उर्दू शब्द, अंग्रेजी शब्द, वाक्यों का प्रयोग, मुहाँवरें, कहावतें, वातावरण परिवेश, प्रतीक, अलंकार, रूपक, औपचारिकता, यमक आदि का अध्ययन किया जाएगा ।

बावजूद इसके प्रस्तुत उपन्यास साहित्य में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति (फ्लॅश बैक) शैली, संवादात्मक शैली या वार्तालाप, पत्रात्मक शैली, चित्रात्मक शैली आदि का अध्ययन किया जाएगा ।

■ उपसंहार

प्रस्तुत शोध विषय का कार्य संपन्न होने पर सभी अध्यायों को निष्कर्ष रुप में मौलिक दृष्टि से उपसंहार में दर्ज किया जाएगा । प्रस्तावना में मेरे मन में उभरे हुए प्रश्नों के उत्तर तथा प्राप्त उपलब्धियों को दर्ज किया जाएगा ।

■ संदर्भ ग्रन्थ सूची

(अ) आधार ग्रन्थ

हिंदी उपन्यास

	ग्रन्थ का नाम	लेखक
1.	बंदी शिवा	पन्नालाल इंदुरख्या
2.	महाराष्ट्र वीर	बाबू रामप्रताप गुप्ता
3.	पूना में हलचल	बाबू रामप्रताप गुप्ता
4.	सूर्य का रक्त	मनहर चौहान
5.	जय भवानी	मनहर चौहान
6.	शिवनेर केसरी	यादवचंद्र जैन
7.	सौंदर्य कुसुम	बलभद्रसिंह ठाकूर
8.	अरुणोदय	ओंकारनाथ दिनकर
9.	रिहाई	एम.के. पाध्ये
10.	जय अंबे	श्यामनारायण प्रसाद
11.	गढ़ आया सिंह गया	शंकर बाम

12. पहला सूरज — डॉ. भगवतीशरण मिश्र
13. छत्रपति शिवाजी — शकुन सत्य
14. शिवाजी और रोशनआरा — कालीचरण शर्मा
15. सह्याद्री की चट्टानें — आचार्य चतुरसेन शास्त्री
16. जीजाबाई का बेटा — कमल शुक्ल
17. महाराष्ट्र का गौरव — स्वप्न इंद्रा
18. छत्रपति शिवाजी — परमेश्वर प्रसाद सिंह
19. मराठा सरदार और औरंगजेब की पुत्री का प्रेम — सूर्यनारायण सिंह

मराठी उपन्यास

	ग्रन्थ का नाम	लेखक
1.	श्रीमान योगी	रणजीत देसाई
2.	महान बंडखोर	डेनिस किंकेड
3.	शिवाजीचा उजवा हात - नेताजी पालकर	ह. ना. आपटे
4.	रायगडाची जीवनकथा	शां.वि. आवळसकर
5.	सूर्योदय	ह. ना. आपटे
6.	गड आला पण सिंह गेला	ह. ना. आपटे
7.	शिवसंभव	वासुदेवशास्त्री खरे
8.	राजसंन्यास	रा. ग. गडकरी
9.	उषःकाल	ह. ना. आपटे
10.	श्री सप्टकोटीश्वर	सूर्यराव देसाई
11.	शिवमोचन	वि. रा. नेणे
12.	मागोवा	नरहर कुरुंदकर
13.	महाराज	बाबासाहेब पुरंदरे

(ब) सहाय्यक ग्रन्थ

हिंदी

1.	छत्रपति शिवाजी	डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त
2.	हिंदी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास	डॉ. प्रतापनारायण टंडन
3.	छत्रपति शिवाजी	कालिकाप्रसाद त्रिपाठी
4.	शिवाजी	श्यामनारायण पाण्डेय
5.	युगदृग्ध छत्रपति शिवाजी	डॉ. गो. रा. कुलकर्णी

6.	शिवा साधना	हरिकृष्ण प्रेमी
7.	हिंदी उपन्यास में छत्रपति शिवाजी	डॉ. कृष्णांत पाटील
8.	हिंदी और मराठी नाट्य साहित्य में छत्रपति शिवाजी	डॉ. विष्णु गव्हाणे
9.	हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी के चरित्र का मूल्यांकन	डॉ. वसंत मोरे
10.	शिवाजी का राजवंश	जदुनाथ सरकार
11.	महाराष्ट्र कुलवंशावली	विद्याप्रकाश स्वामी

मराठी

1.	महापुरुष छत्रपति शिवाजी	सय्यद अमीन
2.	शिवरायांच्या स्फूर्तिकथा	शांताराम कर्णिक
3.	छत्रपती शिवाजी महाराज	कृ.अ. केळुसकर
4.	शिवाजी राजांचे खरे शत्रू कोण?	श्रीमंत कोकाटे
5.	महाराज	बाबासाहेब पुरंदरे
6.	वीर शिवाजी	श्रीपाद जोशी
7.	शिवाजी कोण होता ?	गोविंद पानसरे
8.	स्वराज्याचे शूर सेनानी	दामोदर मकदूम
9.	छत्रपति शिवाजी महाराज स्मृतिग्रंथ	संपा. डॉ. जयसिंगराव पवार
10.	असे घडले छत्रपती	आप्पासाहेब पाठक

शोधार्थी

विवेक सयाजीराव सौताडेकर
एम.ए. बी.एड्. एम.फिल. (हिंदी)
लातूर
तह. लातूर, जि. लातूर

शोध निर्देशक

डॉ. हणमंत पवार
शोध-निर्देशक
हिंदी भाषा व साहित्य अनुसंधान केंद्र
महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातूर

डॉ. हणमंत पवार
एम.ए.बी.एड. सेट, पीएच.डी. (हिंदी)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शहीद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी
तह. औसा, जि. लातूर